3. नागरिकशास्त्र एवं भूगोल :—

भूगोल इस जगत की प्राकृतिक दशाओं का अध्ययन करता है और हमें इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि किसी भी राष्ट्र की भौगोलिक स्थिति का उसके नागरिकों का जीवन व रहन-सहन पर प्रभाव पड़ता है। ~~का~~ ना०शा० का मुख्य उद्देश्य छात्रों में विश्वबन्धुत्व की भावना का विकास करना होता है और ना०शा० का शिक्षक भूगोल का यथास्थान समन्वय स्थापित करके इस उद्देश्य को प्राप्त करता है। भूगोल के द्वारा ही उसे पता चलता है कि हमारे रीति-रिवाज, परम्पराओं, वेश-भूषा आदि में अन्तर भौगोलिक परि-स्थितियों के कारण है।

प्रसिद्ध विद्वान रूसो का विचार है, "जलवायु का प्रभाव शासन पर पड़ता है। जलवायु व सरकार का गहरा सम्बन्ध है। साथ ही भौगोलिक स्थिति का प्रभाव सैनिक शक्ति पर भी पड़ता है।"

इन दोनों विषयों के सम्बन्ध को दृष्टि हेतु विद्वानगणों ने माना है कि भौगोलिक परिस्थितियां नागरिकों के सामाजिक, आर्थिक व राजनैतिक जीवन को प्रभावित करती है और इनका प्रभाव शासन के स्वरूप पर भी पड़ता है। इसलिए भूगोल व ना०शा० का सम्बन्ध बहुत घनिष्ठ है।

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

4. नागरिकशास्त्र एवं साहित्य :—

नागरिकशास्त्र अपने नागरिकों के आचरण हेतु कुछ आदर्श या मापदण्ड प्रस्तुत करता है और साहित्य समाज में विद्यमान परिस्थितियों का अनुसरण करता है। इसी कारण किसी भी समाज की या उसकी विशेषताओं को हम जानना चाहते है तो हमें साहित्य पर निर्भर रहना होता है। इसी कारण विद्वानगण मानते है कि साहित्य समाज का दर्पण है। कभी-कभी ऐसा भी होता है कि साहित्य द्वारा प्राप्त आदर्शों को नागरिकशास्त्र अपनाता है और उसे आगामी पीढ़ी तक पहुँचाने का प्रयास भी करता है। आदर्श नागरिकों के निर्माण में साहित्य की अनुपम देन है।

5. नागरिकशास्त्र एवं विज्ञान :—

नागरिकशास्त्र का लक्ष्य है कि वह विज्ञान के सहयोग से जनसामान्य के जीवन को सुधारने का प्रयास करें। लोग वह अपने शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य को अच्छा रख सकें। इन दोनों विषयों का प्रत्यक्ष सम्बन्ध तो नहीं है परन्तु जब हम विज्ञान की मानव-जीवन को देन तथा विज्ञान के इस देन के प्रति नागरिकों का क्या उत्तरदायित्व है, इसका अध्ययन करते है तो इन दोनों विषयों को सम्बन्धित करने का प्रयास करते है।

6. नागरिकशास्त्र एवं अर्थशास्त्र :-

ना०शा० की भाँति अर्थशास्त्र भी मानव-जीवन का अध्ययन करता है। परन्तु अन्तर सिर्फ इतना है कि अर्थशास्त्र मानव-जीवन की अर्थ-क्रियाओं व अर्थ-आवश्यकताओं का अध्ययन करता है। प्राचीन काल में कौटिल्य ने राजनीति पर जो ग्रंथ लिखे हैं उनका नाम अर्थशास्त्र को जोड़ते हुए "राजनैतिक अर्थव्यवस्था" रखा है। अर्थशास्त्र धन की उत्पत्ति व वितरण पर विचार करता है तो नागरिकशास्त्र इस बात पर विचार करता है कि देश के नागरिकों को कैसे आर्थिक दृष्टि से कुशल बनाया जा सकता है? कैसे उनकी आर्थिक आवश्यकताओं को पूरा करके उनको आत्मनिर्भर बनाया जा सकता है?

कार्ल मार्क्स ने ठीक ही कहा है, "आर्थिक तत्व ही समाज की प्रत्येक व्यवस्था का निर्धारण करते हैं।"

चार्ल्स बियर्ड के शब्द, "अर्थशास्त्र के बिना ना०शा० अवास्तविक एवं सराहनीय ढाँचा मात्र है और ना०शा० के बिना अर्थशास्त्र प्रेरणाहीन।"

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

7. नागरिकशास्त्र एवं समाजशास्त्र :—

नागरिकशास्त्र व समाजशास्त्र का सम्बन्ध घनिष्ठ है चूँकि दोनों ही मानवीय सम्बन्धों का अध्ययन करते है। वास्तव में राज्य समाज का एक अंग मात्र है। समाज की राजनैतिक व्यवस्था ही राज्य है। समाजशास्त्र समाज व सामाजिक सम्बन्धों का अध्ययन करता है।

गिन्स ने कहा है, "सामाजिक तथ्यों का विज्ञान ही समाजशास्त्र है।"

इसके विपरीत नागरिकशास्त्र समाज में रहने वाले नागरिकों के अधिकार व कर्तव्यों का अध्ययन करता है।

प्रो० कैटलिन ने कहा है "राजनीतिशास्त्र और समाजशास्त्र अखण्ड है तथा यथार्थतः एक ही चित्र के दो पक्ष है।"

वास्तव में देखा जाय तो समाजशास्त्र राजनीतिशास्त्र के अध्ययन में सहायक होता है तथा राजनीतिशास्त्र समाजशास्त्र के अध्ययन की महत्वपूर्ण सामग्री प्रस्तुत करता है।

गेटिल के शब्द, "राजनीतिविज्ञान समाजशास्त्र को समाज की सामान्य रूपरेखा के तौर पर वे घटनाएं प्रदान करता है जिनका गहरा सम्बन्ध राज्य के संगठन व कार्यों से होता है।"

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया